

सुप्रभात बच्चों,

आपका हर दिन हंसता मुस्कुराता रहे बिल्कुल आप की तरह मेरे जहन में एक बात आई की मैंने आपको सर्कस कविता का अर्थ नहीं समझाया और सबसे बड़ी बात कि आप लोगों में से किसी ने भी इस बात की मांग नहीं की जैसे मुझे भली-भांति ज्ञात है कि हमारे बच्चे इतने बुद्धिमान हैं की आप लोग कविता का अधिकतर अर्थ तो समझ ही गए होंगे लेकिन फिर भी आपके मन में जो भी असमंजस या जिज्ञासा है उसे आज दूर कर दूंगी तो आइए चलते हैं सर्कस की दुनिया में।

सर्कस आज एक खत्म होती हुई कला है।सरकारी

संरक्षण और प्रोत्साहन के अभाव, आधुनिक टेक्नॉलॉजी-आधारित मनोरंजन के प्रभुत्व और उसकी अपनी आन्तरिक समस्याओं के चलते वह अपनी पारम्परिक जगह को खोता जा रहा है

लेकिन आज भी वह न सिर्फ एक बड़े दर्शक वर्ग को आकर्षित करता है, बल्कि एक कौतूहल की रचना भी करता है। उस विशाल तम्बू के भीतर जहाँ शो शुरू होते ही जैसे जिंदगी और खुशी नाचने लगती है, सुख, दुःख, आशा-निराशा, यातना और उत्पीड़न का एक भरा-पूरा संसार भी रहता है। खासतौर से भारतीय सर्कस अपने अभावों और भविष्यहीनता के चलते एक बहुस्तरीय यंत्रणा का परकोट है। सर्कस उन पहलुओं को हमें दिखाता है, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। वह चाहे वहाँ काम करने वाले लोगों की पीड़ा हो, या जानवरों की, हमें ऐसे अनुभव से रूबरू कराती है जो दर्शक के रूप में हमारे लिए अलभ्य रहे आये हैं।

सर्कस सिर्फ शामियाने के भीतर चलने वाला तमाशा ही नहीं, देश का विराट रूपक भी है जहाँ अभिनेता अपनी-अपनी आकांक्षाओं, द्वन्द्वों और छद्म में साँस लेते सर्कस भी एक प्रकार का मनोरंजन का साधन होता है। जिसे सभी आयु-वर्ग के लोग पसंद करते हैं। सर्कस में विविध प्रकार के करतब दिखाये जाते हैं। सर्कस में जंगली जानवरों जैसे शेर, हाथी, भालू आदि प्रशिक्षित करके उनसे तरह-तरह के खेल-तमाशा दिखाये जाते हैं। साथ ही आदमी भी जोकर आदि की शकलें बनाकर लोगों का मनोरंजन करते हैं। अब तो सर्कस न के बराबर हो गये हैं। पहले सर्कस को उनके लिए विशेष रूप से बनाए गए टेंट में आयोजित किए जाते थे।

अखाड़ा बीच में होता था जहां करतब दिखाए जाते थे। वहां रंगीन जोकर (मुखौटा) भी होते थे जो दर्शकों के मोहित करने के लिए बनाये जाते थे। युवा लड़के और लड़कियों को चमकदार रंगीन कपड़े पहनाया जाता था। वहाँ पिरामिड बनाकर और अन्य एथलेटिक करतब दिखाए जाते थे। बैंड और फ्लाइंग्स सर्कस के माहौल को एक आलौकिक दृश्य देता था। ट्रेपेज़ सबसे कठिन और खतरनाक करतब माना जाता था।

गृहकार्य

उपरोक्त सरकस के बहुआयामी पहलुओं को पूरे मनोयोग से पढ़ें और अपने मनमस्तिष्क में उतारें